14 घिसे-पिटे, पारम्परिक विचारों का प्रतिरोध

डॉमिनिक विजय

शारीरिक बल की माँग करने वाले खेल में एक स्त्री के उच्च प्रदर्शन या नफासत भरे किसी कलात्मक, सुरुचिपूर्ण खेल में एक पुरुष के विजयी होने पर हम हैरान होते हैं। क्षेत्र और इलाके के हिसाब से भी हम खेलकूद की क्षमताओं को आँकते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर–पूर्वी मूल के एक व्यक्ति को तुरन्त फुटबॉल टीम में रख लिया जाता है, फिर चाहे उसकी दिलचस्पी किसी और खेल में ही क्यों न हो। इसी प्रकार, बहुत कम सम्भावना होगी कि किसी छोटे कद वाले व्यक्ति को बास्केटबॉल टीम के लिए चुन लिया जाए। लेकिन यहाँ इस बात पर ध्यान दिया जाना जरूरी है कि जहाँ कुछ घिसी–पिटी धारणाओं में दम हो सकता है, वहीं कुछ अन्य ऐसी भी होंगी जिनमें कुछ भी दम न हो। यह सही है कि ऊँचे कद वाला व्यक्ति बास्केटबॉल खेलने में बेहतर होता है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि छोटे या साधारण कद वाले खिलाड़ी में अच्छा बास्केटबॉल खेल पाने की दक्षता हो ही नहीं सकती। यदि टीम बनाने की या खेलते समय छँटनी की प्रक्रिया इसी तर्ज पर होगी तो कुछ प्रतिभाशाली और कुशल खिलाड़ी अपना हुनर साबित करने के अवसर से वंचित ही रह जाएँगे।

एक समूह का हिस्सा बन पाने और उसके द्वारा स्वीकार कर लिए जाने की आवश्यकता समाजीकरण की प्रक्रिया का परम्परागत रूप है, और इसके चलते ही बच्चे अपने लिए कोई 'लिंग विशिष्ट' खेल चुनते हैं।

एक समूह का हिस्सा बन पाने और उसके द्वारा स्वीकार कर लिए जाने की आवश्यकता समाजीकरण की प्रक्रिया का परम्परागत रूप है, और इसके चलते ही बच्चे अपने लिए कोई 'लिंग विशिष्ट' खेल चुनते हैं। अक्सर यह देखा जाता है कि एक नन्हा बालक रस्सी–कूद करने से डरता है, कि सब उसका मजाक उड़ाएँगे जबकि मेरे हिसाब से रस्सी–कूद, फुटबॉल के खेल से जुड़े कौशल विकसित करने के लिए एक बुनियादी सम्पूर्ण व्यायाम है।

ऐसी घिसी–पिटी पारम्परिक छवियाँ शिक्षकों में सामान्य तौर पर जागरूकता की कमी की वजह से भी बनती हैं। जाने–अनजाने वे बहुत बार खेल और शारीरिक शिक्षा के बारे में इस प्रकार के विचारों और दृष्टिकोणों को बढ़ावा देते हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक स्कूल और उसके शारीरिक शिक्षा अध्यापकों के पास 'समावेशी' टीमें हों, और उनके व्यायाम–सत्र भी इसी प्रकृति के हों। प्रशासक यदि खेलकूद और व्यायाम आदि को सबके लिए अनिवार्य कर दें तो विभिन्न परिवेशों से आए और अलग–अलग कौशल–स्तर के बच्चों को अपनी–अपनी पसन्द के खेल के प्रति लगाव विकसित करने का अवसर मिलेगा; और किसी भी बच्चे को रूटीन किस्म की, बहुत ही गिनी–चुनी शारीरिक गतिविधियों में नहीं डाल दिया जाएगा। लेकिन बच्चों की पीठ बस इसलिए थपथपाना ही काफी नहीं है कि वे सभी खेलों में भाग लें। हमें इसके आगे भी जाना होगा।

जेण्डर–रूढ़ियों को तोड़ने जैसे महत्वपूर्ण काम के लिए लड़के और लड़कियों, दोनों के लिए रस्सीकूद जैसे व्यायामों को अनिवार्य कर देना जरूरी होगा। इससे जेण्डर रूढ़ियों के टूटने के साथ–साथ उनमें खेलकूद से जुड़े कौशल भी विकसित हो रहे होंगे। लिंग–मिश्रित टीमें हों तो प्रत्येक बच्चे–बच्ची की खेल–भागीदारी सुनिश्चित होती है। किसी फुटबॉल टीम में लड़की का होना नुकसान की बात नहीं है, बल्कि समता और बराबरी की बात है। जेण्डर सम्बन्धी रूढ़ियों से जूझने और उन्हें तोड़ने के प्रयास का सबसे प्रमुख उदाहरण है भारत की अग्रणी महिला बॉक्सर मैरी कॉम का। उनकी उपलब्धियाँ हम सबकी कल्पनाओं की उड़ान से कहीं अधिक ऊँची है। बॉक्सिंग रिंग में उनके बढ़ते दबदबे के साथ ही सफलता के शिखर तक पहुँचने की उनकी अद्‌भुत यात्रा प्रशंसनीय है।

मेरे विचार से, शारीरिक कद–काठी की किस्मों पर आधारित रूढ़–छवियों को रद्द करने का कोई भी लम्बे दौर का नजरिया समय, पैसे और मेहनत की दृष्टि से महँगी प्रक्रिया होगी। लेकिन हमें इसकी पूरी तरह उपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए। सही अवसर, वाजिब खेल–सुविधाओं, और तकनीकी सहयोग के साथ–साथ एक व्यवस्थित चयन प्रणाली के रास्ते हर इच्छुक बच्चे

को उसकी अपनी पसन्द का खेल चुनने का उचित और बराबर मौका दिया जाएगा। मैं सोचता हूँ कि अगर उन्हें केवल उनके छोटे कद के चलते एन.बी.ए. के लिए नहीं चुना गया होता तो एलन आइवर्सन की प्रतिभा का क्या हश्र होता!

रूढ़िग्रस्त सोच से निजात पाने के अल्पकालीन लक्ष्य को पाने की दृष्टि से एक 'बहु–स्तरीय' विधि अपनाई जा सकती है। एक सरल सी गतिविधि के माध्यम से प्रतिभागियों को उनकी प्रतिभा के आधार पर अलग–अलग वर्गों में बाँटा जा सकता है, और इससे चयन प्रक्रिया सरल हो जाएगी। शुरुआत में प्रतिभागियों की दस जोड़ियाँ बना दी जाएँ। फिर उनके लिए किसी एक कौशल का प्रदर्शन करके दिखाया जाए, जिसका प्रयोग करने पर ही वे कौशल की अगली सीढ़ी चढ़ पाएँगे। उदाहरण के लिए, आपके बाईं ओर खड़े किसी व्यक्ति तक एक गेंद को केवल एक ही बार छूकर गोलाकार ढंग से पहुँचाना। ऐसे प्रत्येक सफल पास के साथ वह खिलाड़ी अपनी दाहिने ओर को खिसकता है और अपने उन अन्य साथियों के साथ यही खेल जारी रखता है, जो खुद भी अपनी–अपनी जगह से दाहिनी ओर को खिसक रहे हैं। इस तरह की एक गतिविधि के बाद आपके पास अलग–अलग किस्म की, कई तरह की प्रतिभा का भण्डार होगा और इस दौरान प्रत्येक बच्चे को भाग लेने का अवसर मिल पाएगा!

जड़–छवियों के तमाम रूपों को सिरे से खत्म करने, या कम से कम ऐसा करने के प्रयास से हम सबके लिए सांस्कृतिक और सामाजिक लाभ हासिल हो सकते हैं। अनचाहे रास्तों पर चलने वाले आला दर्जे के खिलाड़ी हमारे लिए प्रेरणादायक नायक बन जाते हैं। अपने पसन्दीदा खेल में लग जाने को तत्पर जोशीले, नौजवान खेल–प्रेमियों के लिए मानदण्ड स्थापित करने वाले ये खिलाड़ी अपने–अपने खेल में अग्रणी रहते हैं और अपने समय के सितारे बन जाते हैं। अपने इन बड़ों की हौसला–आफजाई से ही अधिक संख्या में हमारे नन्हे–मुन्ने वह खेल अपनाएँगे जिसमें उन्हें आनन्द आता है। असम्भव को सम्भव बनाने की तीव्र इच्छा से ही चैम्पियन बनते हैं। विजेताओं की एक पीढ़ी के चलते और अधिक संख्या में उनके सरीखे विजेता पैदा होते हैं और समूचा राष्ट्र पहले से अधिक विकास की ओर बढ़ता है।

जड़–छवियों को लेकर समाज की सोच में बदलाव आ रहा है, लेकिन दिल्ली अभी दूर है। केवल इसलिए कि हमारी अपनी सोच विकृत है, एक व्यक्ति को खेलों और शारीरिक शिक्षा से मिलने वाले लाभ हासिल करने से हतोत्साहित नहीं किया जा सकता। बुनियादी तथा सार्वभौमिक तौर पर मान्यताप्राप्त तमाम सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों को घिसी–पिटी छवियों के भंजन की प्रक्रिया के सह–उत्पाद के तौर पर दायरे में लाने का काम हमारे लिए बड़ी तस्वीर के हिस्से के रूप में होना चाहिए। इस उद्देश्य को पाने के लिए हमें निचले स्तर पर अपनी शुरुआत करने के साथ–साथ ऊपर के स्तर पर भी कुछ बदलाव लाने की

कोशिश करनी होगी। बढ़ी हुई भागीदारी से ही हमारे प्रतिभा–कोष में विविधता भी आएगी।

खेलों के माध्यम से अधिकारों और सशक्तीकरण सरीखे बराबरी और समता के हमारे उद्देश्य सुदृढ़ होते हैं। जिन–जिन जगहों का इस्तेमाल खेलों के लिए हो सकता है, उन तमाम जगहों की सुलभता हमारे विद्यार्थियों के लिए सामूहिक तौर पर नए कौशल विकसित करने में मदद देगी, उन्हें अभिव्यक्ति और चलने–फिरने की आजादी का आनन्द उठाने लायक बनाएगी। इससे शिक्षा और नेतृत्व को भी बढ़ावा मिल सकता है, जिनका होना किसी भी समाज और संस्कृति के विकास के लिए आवश्यक है।

आइए, साथ मिलकर काम करें, एक सफल भारत का निर्माण करें!

डॉमिनिक विजय *ने आइ.आइ.एम. कोझीकोड से जनरल मैनेजमेण्ट में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और व्हार्टन से 'सर्विस स्ट्रैटेजी' में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उनके पास पीपुल मैनेजमेण्ट, ऑपरेशन्स, बिजनेस डेवलपमेण्ट, मार्केटिंग एण्ड सेल्स के क्षेत्रों में 13 साल से भी अधिक का अनुभव है। डॉमिनिक की कल्पना में उस समूची प्रक्रिया का हिस्सा बनना शामिल है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए श्रेष्ठता की मंजिल तक पहुँचने का रास्ता बनाती है। अपनी इस दृष्टि और खेलों तथा फिटनेस के प्रति लगाव के चलते वे 'लीपस्टार्ट' के साथ ऑपरेशन्स डायरेक्टर की हैसियत से जुड़े हैं।*